एक कहावत है कि जब शत्रु सामने दिखता है तो शहमृग अपना सिर रेंतमे छिपा देता है कि दुश्मन दिखाई नही देता। अत: चला गया है। हमारी समझमें समझमें शहामृग इसी तरहका मुर्ख प्राणी है। ऐसा कहकर क्या शहामृग पर हम अन्याय नही रकते किसीने तो अज्ञान वश यह काल्पनिक कथा निर्माण की। सच देखा जाय तो शहामृग तो शहामृग अफ्रिकाका सबसे श्रेष्ठ, बुद्धिमान, चालाक एवं गतिशील प्राणी है।

शहामृगं पंछी की जाती का प्राणी होकर भी उड नहीं सकता। जब वह दौडने लगता है तब उसके दो पैंरोके बीच दस फीटका फासला होता है। वह प्रति घंटा अस्सी किलो मिटरकी गतिसे दौड सकता है। शायद दौड गतिमें चीते के बाद शहामृग का ही क्रमांक आयेगा। उसकी नजर इतनी पैनी है कि शत्रु अगर दस मीलपर भी हो तो उसे भाँप लेता है। अगर शहामृग दाँव में आ जाये तो वह अपनी टाँगोसे बाघ को जमीनपर सुला सकता है। केनिया की एक कथा सुननेमं आती है की शहामृग की एक मादाने अपने बच्चों की जान बचानेके लिऐ एक शेरसे मुकाबल किया। अंत: शेर जान लेकर भाग खड हुआ।